सामाजिक स्तरीकरण
[SOCIAL STRATIFICATION]

आदिकाल से ही मानव समाज में असमानता व्याप्त रही है। ऐसा समाज जहां उसके सदस्यों में वास्तविक रूप में समानता हो और स्तरीकरण का अभाव हो, एक कोरी कल्पना है। मानव समाज के इतिहास में ऐसी स्थिति कभी नहीं रही। **समनर** की मान्यता है कि इतिहास में कभी भी ऐसा समय नहीं रहा है जिसमें वर्ग घृणा उपस्थित नहीं रही हो। अनेक मानवशास्त्रियों ने आदिम समाजों में समानता का उल्लेख किया है, किन्तु उनमें भी आज के समाज की भांति सामाजिक विषमता के आधार पर समाज में उच्चता और निम्नता का भेद अवश्य रहा है। जैसा कि **गिटलर** कहते हैं, "असमानता सभी संस्कृतियों की विशेषता है, यद्यपि एक समूह से दूसरे समूह में, एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में असमानता के विस्तार एवं प्रकार में अन्तर पाया जाता है।" हम प्रत्येक समाज में दो प्रकार का विभेदीकरण देख सकते हैं—व्यक्तिगत एवं सामाजिक। दो व्यक्तियों के बीच रंग, रूप, नाक, नक्शा, लम्बाई-चौड़ाई, आयु एवं लिंग के आधार पर पाया जाने वाला अन्तर व्यक्तिगत विभेदीकरण है, जबकि कार्य, धर्म, संस्कृति, रुचि, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक सत्ता एवं पद के आधार पर पाये जाने वाले अन्तर को सामाजिक विभेदीकरण कहते हैं। जब सामाजिक विभेदीकरण में उच्चता एवं निम्नता के भाव जुड़ जाते हैं तो वह सामाजिक स्तरीकरण को जन्म देता है। स्तरीकरण के लिए प्राणीशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक विशेषताएं उत्तरदायी हैं। मानव की सभ्यता एवं समाज के विकास के साथ-साथ सामाजिक असमानता बढ़ती गयी और मानव समाज उच्च और निम्न स्तरों में विभाजित हो गया। समाज में व्याप्त उच्चता और निम्नता की स्थिति को ही हम सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। अन्य शब्दों में, **स्तरीकरण समाज के समूहों एवं सदस्यों के विभिन्न स्तरों में बंटने की प्रक्रिया है।** सामाजिक स्तरीकरण के द्वारा समाज में कार्य-विभाजन करके सामाजिक एकता एवं संगठन को बनाये रखा जाता है और योग्य तथा बुद्धिमान व्यक्तियों को प्रोत्साहन दिया जाता है। प्रत्येक समाज में स्तरीकरण के लिए प्रदत्त और अर्जित दोनों ही आधार पाये जाते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ एवं परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF SOCIAL STRATIFICATION)

सामाजिक स्तरीकरण समाज को उच्च एवं निम्न वर्गों में विभाजित करने और स्तर निर्माण करने की एक व्यवस्था है। स्तरीकरण शब्द समाजशास्त्र में भू-गर्भशास्त्र (Geology) से लिया गया है। भू-गर्भशास्त्र में मिट्टी व चट्टानों को विभिन्न स्तरों में बांटा जाता है। समाज में भी उसी प्रकार की अनेक सामाजिक परतें पायी जाती हैं। प्रत्येक समाज अपनी जनसंख्या को आय, व्यवसाय, सम्पत्ति, जाति, धर्म, शिक्षा, प्रजाति एवं पदों के आधार पर निम्न एवं उच्च श्रेणियों में विभाजित करता है। प्रत्येक विभाजन एक परत के समान है और ये सभी परतें जब उच्चता एवं निम्नता के क्रम में रखी जाती हैं तो सामाजिक स्तरीकरण के नाम से जानी जाती हैं। विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक स्तरीकरण को निम्न प्रकार परिभाषित किया है :

जिसबर्ट के अनुसार, "सामाजिक स्तरीकरण समाज का उन स्थायी समूहों अथवा श्रेणियों में विभाजन है जो कि आपस में श्रेष्ठता एवं अधीनता के सम्बन्धों द्वारा सम्बद्ध होते हैं।"

रेमण्ड मूरे के अनुसार, "स्तरीकरण उच्चतर एवं निम्नतर सामाजिक इकाइयों में समाज का क्षैतिज विभाजन है।"

सदरलैण्ड एवं **वुडवर्ड** के शब्दों में, "स्तरीकरण केवल अन्तःक्रिया अथवा विभेदीकरण की ही एक प्रक्रिया है, जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों की तुलना में उच्च स्थिति प्राप्त होती है।"

टालकॉट पारसन्स के अनुसार, "किसी समाज व्यवस्था में व्यक्तियों का ऊंचे और नीचे क्रम-विन्यास में विभाजन ही स्तरीकरण है।"

ऑगबर्न एवं **निमकॉफ** के अनुसार, "वह प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्तियों एवं समूहों को थोड़े-बहुत स्थायी प्रस्थितियों के उच्चता और निम्नता के क्रम में श्रेणीबद्ध किया जाता है, स्तरीकरण क नाम से जानी जाती है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण द्वारा समाज विभिन्न उच्च एवं निम्न समूहों में विभाजित एवं व्यवस्थित होता है तथा ये समूह परस्पर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और सामाजिक एकता को बनाये रखते हुए समाज में स्थिरता कायम रखते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण एवं विभेदीकरण
(SOCIAL STRATIFICATION AND DIFFERENTIATION)

सामाजिक स्तरीकरण को अधिक स्पष्टतः समझने के लिए विभेदीकरण की अवधारणा को समझ लेना भी आवश्यक है। सामाजिक विभेदीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों और समूहों को कुछ मूर्त आधारों पर विभाजित किया जाता है। उदाहरणार्थ, यदि आयु, लिंग, बुद्धि, व्यक्तित्व, धर्म, प्रजाति, शिक्षा, भाषा एवं सम्पत्ति, आदि के आधार पर व्यक्तियों को अनेक वर्गों में विभाजित कर दिया जाय तो इस प्रक्रिया को हम सामाजिक विभेदीकरण कहेंगे। सामाजिक विभेदीकरण भी समाज में आदिकाल से चला आ रहा है, प्राचीन समय से ही आयु, लिंग एवं रंग के आधार पर व्यक्तियों में भेद किया जाता रहा है। सामाजिक विभेदीकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुए **लम्ले** लिखते हैं, ''विभेदीकरण से हमारा अर्थ उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति भिन्नताओं का पोषण करते हैं जिन्हें एक साथ रखने पर आरकेस्ट्रा के विभिन्न वादकों की तरह एक पूर्णतया समन्वययुक्त सम्पूर्ण की रचना होती है।''

न्यूमेयर के अनुसार सामाजिक विभेदीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें अनेक जैविकीय, वंशानुगत और शारीरिक विशेषताओं जैसे आयु, लिंग प्रजाति, सपिण्डता, व्यक्तिगत व्यवसाय, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक स्थिति, सामाजिक उपलब्धियों, समूह की रचना और सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर अनेक व्यक्तियों और समूह में सामाजिक भिन्नता उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार सामाजिक भिन्नताएं विभेदीकरण की प्रक्रिया का आधार भी हैं और उपज भी। इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि व्यक्ति एवं समूहों में पायी जाने वाली विभिन्नताएं समाज में विभेदीकरण उत्पन्न करती हैं। सामाजिक विभेदीकरण को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम उसकी **विशेषताओं का यहां उल्लेख करेंगे :**

(1) विभेदीकरण एक तटस्थ अवधारणा है, उससे श्रेष्ठता एवं निम्नता के भाव प्रकट नहीं होते। उदाहरण के लिए, हम लोगों को उनके लिंग के आधार पर स्त्री व पुरुष में तथा आयु के आधार पर बालक, युवा और वृद्ध में विभाजित करते हैं तो यह विभेदीकरण कहलायेगा। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि स्त्री व पुरुष, बालक, युवा एवं वृद्ध में कौन श्रेष्ठ है और कौन निम्न।

(2) सामाजिक विभेदीकरण एक जागरूक प्रक्रिया है। इसका अर्थ है—समाज का प्रत्येक व्यक्ति विभेदीकरण के प्रति जागरूक है। हर व्यक्ति यह जानता है कि वह लिंग, आयु, रंग एवं अन्य आधारों पर दूसरों से भिन्नता रखता है।

(3) सामाजिक विभेदीकरण का निर्धारण बाह्य एवं स्पष्ट कारकों द्वारा किया जाता है। उदाहरण के रूप में, लिंग, आयु, प्रजाति, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक प्रगति के आधार पर हम व्यक्तियों में परस्पर भेद कर सकते हैं। ये आधार ही विभेदीकरण को विकसित करते हैं।

(4) सामाजिक विभेदीकरण अवैयक्तिक है, इसका सम्बन्ध समूह एवं समाज को भिन्नता के आधार पर विभाजित करने से है, उनमें विरोध या संघर्ष पैदा करने से नहीं।

(5) विभेदीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, यह आदिकाल से सभी समाजों में व्याप्त रही है।

स्तरीकरण एवं विभेदीकरण में अन्तर
(DISTINCTION BETWEEN STRATIFICATION AND DIFFERENTIATION)

सामाजिक स्तरीकरण एवं विभेदीकरण दोनों ही समाज को विभिन्न समूहों में विभाजित करने की प्रक्रियाएं हैं। ये एक-दूसरे की पूरक होते हुए भी परस्पर भिन्नता लिये हुए हैं। इन दोनों में निम्न अन्तर हैं :

(1) सामाजिक स्तरीकरण का उद्देश्य कुछ विशेष परिस्थितियों को धारण करने वाले व्यक्तियों को अधिक अधिकार, सुविधाएं एवं सुरक्षा प्रदान करना है। इसीलिए यह एक जागरूक एवं जानबूझकर अपनायी जाने वाली प्रक्रिया है। दूसरी ओर विभेदीकरण एक स्वतः एवं स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होने वाली प्रक्रिया है। इसका विकास जान-बूझकर योजनाबद्ध रूप से नहीं किया जाता है।

(2) सामाजिक विभेदीकरण में तो केवल व्यक्तियों एवं समूहों के बीच भिन्नता ज्ञात होती है जबकि स्तरीकरण से भिन्नता के साथ-साथ उच्चता, निम्नता, विशेषाधिकार, सुविधाएं एवं अधीनता का ज्ञान भी होता है।

(3) सामाजिक विभेदीकरण के लिए समूहों का स्थायी होना आवश्यक नहीं जबकि स्तरीकरण में उच्चता और निम्नता के निर्धारण के लिए स्थायी समूहों का होना आवश्यक है।

(4) सामाजिक विभेदीकरण चूंकि स्पष्ट आधारों पर किया जाता है (जैसे आयु, एवं लिंग भेद), अतः यह एक सरल प्रक्रिया है। दूसरी ओर स्तरीकरण का आधार पक्षपात की भावना एवं सामाजिक प्रतिष्ठा है जिन्हें ज्ञात करना सरल नहीं है, अतः यह एक जटिल प्रक्रिया है।

(5) **ओल्सन** का मत है कि स्तरीकरण एक वैयक्तिक प्रक्रिया है जबकि विभेदीकरण अवैयक्तिक। स्तरीकरण में व्यक्ति एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा, विरोध एवं संघर्ष करते हैं जबकि

विभेदीकरण में व्यक्तियों में परस्पर भिन्नता होते हुए भी विरोध एवं संघर्ष नहीं पाया जाता है। उदाहरण के रूप में, स्त्रियां पुरुषों से इस कारण विरोध प्रकट नहीं करतीं कि वे स्त्रियां हैं तथा बालक युवा एवं वृद्ध लोगों से इसलिए रोष प्रकट नहीं करते कि वे बालक हैं?

(6) सामाजिक स्तरीकरण का सम्बन्ध उपयोगिता से है, इसके द्वारा योग्य व्यक्तियों को उच्च पद एवं अधिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं जबकि विभेदीकरण उपयोगिता के आधार पर नहीं किया जाता है।

(7) स्तरीकरण की तुलना में विभेदीकरण की प्रक्रिया अधिक प्राचीन है। पहले विभेदीकरण अस्तित्व में आया और उसके बाद ही स्तरीकरण प्रारम्भ हुआ।

सामाजिक स्तरीकरण एवं विभेदीकरण को हम चित्र द्वारा इस प्रकार प्रकट कर सकते हैं :